तेजी ग्रोवर

करके सीखने वाले रंग

सुना है कि खुद करके देखने से चीज़ें कुछ ज़्यादा समझ में आती हैं। जिन दोस्त की चर्चा मैंने चकमक के पिछले अंक में की थी, यानी चित्रकार सिद्धार्थ, वे कुछ शरारती किस्म के गुरू हैं। वे मुझे कभी कोई चीज़ सीधे से नहीं सिखाते। तुमने उनके बनाए कई सुन्दर चित्र चकमक के अंकों में देखे होंगे। मैं उनसे हल्दी, फूल, अनार की पत्तियों आदि से रंग बनाने के तरीके पूछती रहती हूँ। लेकिन पिछली बार उन्होंने मुझसे सिर्फ इतना कहा, "जब तुम्हें खाना बनाने में मज़ा आने लगेगा, तो तुम खुद सीख जाओगी।" मैंने पिछले दिनों भोपाल में रहने वाली एक ऐसी चित्रकार से दोस्ती गाँठ ली जो घरेलू कामकाज़ करने में भी उतनी ही मौज करती है, जितनी चित्र बनाने में। बाप रे! कोई पापड़ भूनने और अचार बनाने में उतना ही मज़ा ले सकता है, जितना चित्रकला में? जी हाँ। तुम सज्जू जैन से ज़रूर मिलना। वो ऐसी ही पेंटर हैं।

मैंने जैसे ही उनसे हल्दी और अनार आदि से रंग बनाने का ज़िक्र किया, वे फौरन मुझे अपनी रसोई में खींच ले गईं। हल्दी में खाने का सोडा मिलाना उनका ही सुझाव था। खाने के सोडे की जगह मैं कपड़े धोने वाले खादी साबुन का उपयोग किया करती थी। फूलों और पत्तियों से रंग बनाने के बारे में अगले कुछ अंकों में बात करूँगी। क्योंकि खाने के सोडे और फिटकरी के उपयोग से तो हल्दी में ही कई नए रंग निकल आए हैं। देखो:

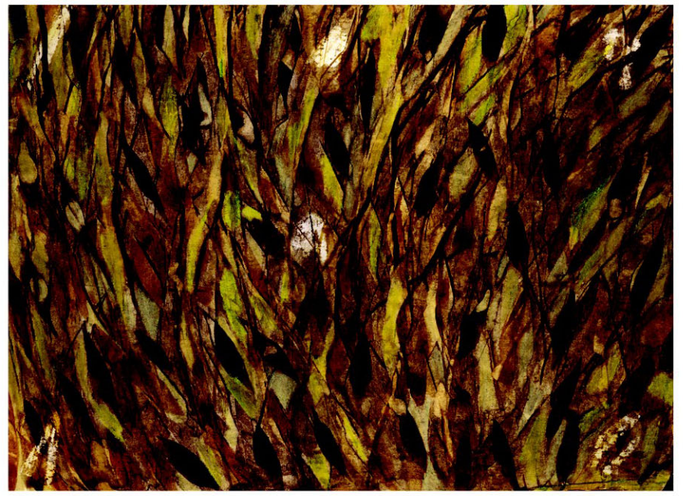

1. हल्दी के घोल में एक चम्मच खाने का सोडा मिला दो। रंग लगभग लाल हो जाएगा। रंग का हल्का या गाढ़ा हो जाना सोडे की मात्रा पर निर्भर करता है। दोनों चीज़ों की मात्रा घटा-बढ़ाकर तुम खुद प्रयोग कर सकते हो। घोल को उबालकर कपड़े से छान लो। तुम्हारा रंग तैयार है।

2. इस रंग को बिना छाने इस्तेमाल करना हो तभी गोंद मिलाना, वरना नहीं। मैं बबूल की गोंद बनाकर मिलाती हूँ। इससे दानेदार हल्दी के टेक्स्चर चित्र में आ जाते हैं। इसी तरह अनार के छिलकों का रंग भी छानकर (बिना गोंद के) या बिना छाने गोंद के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। बिना गोंद के दानेदार रंग चित्र से झड़ जाएँगे। ये रंग इतने पक्के हैं कि कपड़े पर लग जाएँ तो उतरते ही नहीं। अनार के छिलके के रंग से तो कपड़े भी रंगे जा सकते हैं।

3. यह हल्दी वाला तरीका मैं दोबारा इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि खाने वाला सोडा और हल्दी को उबाल लेने के बाद जब मैंने दो-तीन चुटकी पिसी फिटकरी भी उस में डाल दी तो क्या बढ़िया रंग मिला मुझे – पके पपीते या दशहरी आम के गूदे का रंग। यह रंग मुझे पहली बार हल्दी में देखने को मिला। मीठे केसरिया चावलों का रंग या "डिस्को" पपीते का? तुम खुद करके देखना! कोई नया रंग मिले तो हमें ज़रूर बताना। इस बातचीत का मज़ा ही तभी आएगा अगर तुम भी करके सीखने वाले रंगों का अनुभव हमसे साझा करते रहोगे।

चित्र - तेजी ग्रोवर

जॉन ड्यूई एक किस्सा

ड्यूई का पढ़ने का कमरा बाथरूम के एकदम नीचे था। एक दिन वे गणित के एक नए सिद्धान्त पर गहरी सोच में डूबे हुए बैठे थे। अचानक अपनी पीठ पर उन्हें पानी की एक धार सरकती महसूस हुई। वे तुरन्त अपनी कुर्सी छोड़कर ऊपर भागे। उन्होंने देखा कि बाथरूम पाल वाली नावों से भरा पड़ा था और टब में से पानी छलक रहा था। उनका बेटा फ्रेड अपने हाथों का बाँध बनाकर पानी को रोकने की कोशिश कर रहा था। दरवाज़े पर खड़े पापा ड्यूई से उसने सख्ती से कहा, "बहस मत करो, जॉन – पोंछा लेकर आओ।"

"खुद करके सीखो" सिद्धान्त के एक बड़े ज्ञानी, दार्शनिक और शिक्षा-शास्त्री – जॉन ड्यूई (1859-1952, अमरीका)।